Jai Geeta Mata – Geeta ki Aarti

Shree Jai Geeta Mata

Jai Geeta Mata, Shree Jai Geeta Mata
Sukh Karni Dukh harni, tum ko jag gaata, **Om Jai Geeta Mata**

Agyan moh mamta ko, charnd mein naash kare
Satya gyan ka mun mein, tu prakash kare,
Om Jai Geeta Mata

Sharan teri jo aawe, teri matti graham kare,
Paap taap mittjaawe, nirbhay bhaw sindhu tare
Om Jai Geeta Mata

Rand chetra mein Arjun, jab shokdhaari hua,
Kartbya Karma taj baytha, bahut maleen hua,
Om Jai Geeta Mata

Tab Shree Krishna ke mukh se, tumne autaar liya,
Tatwa gyan samjha kar, us ka udhaar kiya
Om Jai Geeta Mata

Shareer janamte marte, Aatma avinashi
Shareer ka dukh veyaape, aatma sukhkaaree
Om Jai Geeta Mata

Ataha sharer ki mumta, munse tyag karo
Aatam braham ko cheenoh, us se anuraag karo
Om Jai Geeta Mata

Sab mein braham ko jaano, sabse preeti karo,
Vayraya bhaw mumta wash, hoke na anreeti karo
Om Jai Geeta Mata

Nish kaam karm nitya kartke, jag ka upkaar karo
Phal waancha ko tyaag, sadh veyohaar karo
Om Jai Geeta Mata

Munko wash mein karke, icchaa tyag karo
Nishkaam jagat mein rah kar, hari se anuraag karo
Om Jai Geeta Mata

Yeh updesh jo tere, mun mandir laawe,
Bhagwaan bhawsaagar se who, kiun na tar jaawe,
Om Jai Geeta Mata

Jai Geeta Mata – Geeta ki Aarti

ॐ श्री जय गीता माता

जय गीता माता श्री जय गीता माता ।
सुख करनी दुख हरनी, तुम को जग गाता ।

अज्ञान मोह ममता को, क्षण में नाश करे,
सत्य ज्ञान का मन में, तू प्रकाश करे ॥ ॐ जय गीता...

शरण तेरी जो आवे, तेरी मति ग्रहण करे,
पाप ताप मिट जावे, निर्भय भव सिंधु तरे ॥ ॐ जय गीता...

रण क्षेत्र में अर्जुन, जब शोक धारी हुआ,
कर्त्तव्य कर्म तज बैठा, बहुत मलीन हुआ ॥ ॐ जय गीता...

तब श्री कृष्ण के मुख से, तुम ने औतार लिया,
तत्वज्ञान समझा कर उस का उधार किया ॥ ॐ जय गीता...

शरीर जन्मते मरते, आत्मा अविनाशी,
शरीर का दुख व्यापे, आत्मा सुखराशी ॥ ॐ जय गीता...

अतः शरीर की ममता, मन से त्याग करो ,
आत्म ब्रह्म को चीन्हो, उस से अनुराग करो ॥ ॐ जय गीता...

सब में ब्रह्म को जानो, सब से प्रीति करो,
बैर भाव ममता वश, होके न अनरीति करो ॥ ॐ जय गीता...

निष्का कर्म नित्य करके, जग का उपकार करो,
फल वांछा को त्याग, सद्व्यवहार करो ॥ ॐ जय गीता...

मन को वश में कर के इच्छा त्याग करो,
निष्काम जगत में रह कर, हरि से अनुराग करो ॥ ॐ जय गीता...

यह उपदेश जो, तेरे मन में लावे,
भगवान भवसागर से वह, क्यो न तर जावे ॥ ॐ जय गीता...